SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

माध्यमिक स्तर के पारिवारिक एवं छात्रावासीय परिवेश में रहकर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के विद्यालयीन समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

मधुलिका शर्मा, शिक्षाशास्त्र,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
मधुलिका शर्मा, शिक्षाशास्त्र,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर,
मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 28/01/2020
Revised on : -----
Accepted on : 01/02/2020
Plagiarism : 04% on 28/01/2020

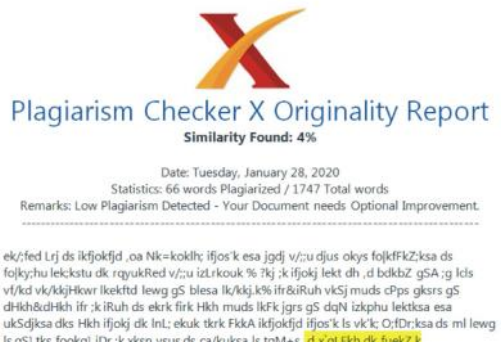
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 4%

Date: Tuesday, January 28, 2020
Statistics: 66 words Plagiarized / 1747 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

प्रस्तावना :–

घर या परिवार समाज की एक इकाई है। यह सबसे अधिक आधारभूत सामाजिक समूह है इसमें साधारणः पति–पत्नी और उनके बच्चे होते है कभी–कभी पति या पत्नी के माता पिता भी उनके साथ रहते है कुछ प्राचीन समाजों में नौकरों को भी परिवार का सदस्य माना जाता था। पारिवारिक परिवेश से आशय व्यक्तियों के उस समूह से है, जो विवाह, रक्त या गोद लेने के बंधनों से जुड़े एक गृहस्थी का निर्माण करते हैं। पति–पत्नी, माता–पिता, पुत्र–पुत्री, भाई–बहिन, अपने–अपने सामाजिक कार्यों से एक दूसरे पर प्रभाव डालते हैं। व्यवहार एवं संबंध रखते हैं तथा एक सामान्य संस्कृति का निर्माण करते हैं और उसे बनाये रखते हैं।

छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों का स्वभाव भिन्न प्रकार का होता है। वे परिवार से अलग होकर अध्ययन करते हैं। परिवार में मिलने वाली सुविधायें छात्रावास में नहीं मिलती हैं। परिवार में रहकर अध्ययन करने वाले तथा छात्रावास में रहकर अध्ययन करने वाले विद्यार्थी विद्यालय में अपने आपको किस प्रकार समायोजित कर पाते हैं इसी जिज्ञासा से प्रस्तुत समस्या को जन्म दिया इसलिए शोधार्थी द्वारा परिवार एवं छात्रावास में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के विद्यालयीन समायोजन स्तर का अध्ययन किया है।

मुख्य शब्द :–

पारिवारिक एवं छात्रावासीय परिवेश, विद्यार्थी तथा विद्यालयीन समायोजन।

वस्तुतः परिवार का अर्थ है– परिवेश घर की दीवारे और छत नहीं। परिवार का परिवेश अनेक प्रयासों से

परिपूर्ण होता है इस परिवेश में स्नेह और अधिकार दोनों एक साथ रहते हैं वस्तुतः परिवार या घर का अस्तित्व बहुत कुछ मानसिक या भावनात्मक होता है। परिवार में निःस्वार्थ, स्नेह, सुरक्षा, सोहार्द्र, सम्मान तथा परस्पर समर्पण के भाव पलते हैं यही भाव घर या परिवार है।

परिवार में रहकर ही बालक बड़ों की आज्ञा का पालन करना, अनुशासन में रहना परिवार के सदस्यों को एक दूसरे की सहायता करते देख सहयोग की शिक्षा एवं अपने कर्त्तव्यों का सही तरह से पालन करना आदि की शिक्षा बालक परिवार में रहकर की ग्रहण करता है।

छात्रावासीय परिवेश :–

प्राचीनकाल में हमारे देश में गुरु के सान्निध्य में रहकर ही विद्यार्थी विद्यापार्जन किया करते थे। शिक्षा प्राप्त करने हेतु गृह त्यागने की परंपरा रही है, शिक्षा ग्रहण करने हेतु गुरूकुल आश्रम, मंदिर आदि में विद्यार्थी जाकर रहते हैं एवं आचार्यों एवं गुरुओं के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करते हैं। गुरुजन अपने गृह पर ही विद्यार्थी के आवास एवं निवास की व्यवस्था करते थे। भोजन का कार्य भिक्षा वृत्ति द्वारा चलता था या गुरुजन गृह में भी व्यवस्था हो जाती थीं। उस समय से ही गुरुकुल अर्थात् छात्रावासीय परंपरा की शुरूआत हुई। राजा–महाराजाओं के बालक शिष्य बनकर गुरुकुल में रहते थे और गुरुकुल के आश्रम में वे सभी कार्य करते थे जो गुरु की आज्ञा होती थी। यहां किसी में कोई भेदभाव नहीं रहता था। गुरु के लिए सभी समान थे। अतः गुरु सभी को एक जैसी ही शिक्षा देते थे।

महाविद्यालय अथवा विद्यालय के क्षेत्र से अलग दूर–दराज के क्षेत्रों से शिक्षा ग्रहण करने आये छात्र छात्राओं का निवास, स्थान, जो कि विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय अथवा संस्थाओं व समुदायों द्वारा संचालित होते हैं। इसमें छात्रों के शारीरिक मानसिक व नैतिक गुणों के विकास के साथ साथ भोजन एवं मनोरंजन के साधन भी उपलब्ध होते हैं, छात्रावास कहलाते हैं।

आज के बदलते सामाजिक परिवेश में एक ओर जहां भौतिकवादी विचारधारा बढ़ती जा रही है वहीं दूसरी ओर संयुक्त परिवार व संस्कृति। ऐसे में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी जहां एक ओर अपनी पारिवारिक परिवेश से दूर रहकर उच्च व गुणात्मक शिक्षा की नींव रखता है वहीं दूसरी ओर परिवार के सहयोग के बिना वह अपने जीवन का एक नया आरंभ करता है जहां उसे बहुत सी समस्याओं से स्वयं ही जूझना पडता है। एक ओर जहां छात्रावास उसे नये वातावरण में अनुकूलन परस्पर समन्वय आदि गुण सिखाते हैं वहीं दूसरी ओर निरंकुशता का दुरुपयोग भी। ऐसी परिस्थितियों में एक माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी अनेक प्रकार की मनोदशाओं, विचारों व संवेगों से गुजरते हैं एवं उसके अंतर्मन में अनेक स्थिति व व्यवहार पर बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ता है। छात्रावास में रहते हुए कई ऐसी परिस्थितियां निर्मित होती हैं जो विद्यार्थी की मानसिक स्थिति व सोच पर अत्यंत प्रभावशाली होती है और आगे आने वाले जीवन में उसके सामाजिक व्यवहार में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से प्रतीत होती है।

समायोजन :–

एक व्यक्ति को सफल जीवन व्यतीत करने के लिये अपने वातावरण एवं परिस्थितियों से समायोजन स्थापित करना आवश्यक हो जाता है। व्यक्ति को अनेक प्रकार की समाज में समस्याओं का सामना करना पड़ता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी अलग–अलग क्षमता के अनुसार समायोजन करने का प्रयास करता है। कुछ लोग प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने में सफल होते हैं और कुछ लोग हार मानकर अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठते हैं।

समायोजन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के ऐड–जस्ट शब्द से हुई है। इसका आशय है कि 'सही की तरफ' अर्थात् किसी परिस्थति में सामंजस्य बनाये रखने के लिये जो उचित हो वैसा व्यवहार करना समायोजन है। यह वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति या प्राणी अपनी आवश्यकताओं एवं सन्तुष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों के साथ सांमजस्य स्थापित करने में सफल होता है। समायोजन से

अभिप्राय कई प्रत्ययों से है जैसे–अभाव, तृप्ति, भग्नाशा एवं तनावात्मक स्थितियों से बचने की क्षमता, मन की शान्ति एवं लक्षणों का निर्माण। इसका आशय यह सीखना हुआ कि अन्य व्यक्तियों के सम्पर्क में एक व्यक्ति कितनी सफलता से निर्वाह कर सकता है।

जर्सफील्ड **गेट्स** ने समायोजन के अर्थ को स्पष्ट करते हुये कहा–समायोजन को सामान्यतः सांमजस्य, व्यवस्थापन या अनुकूलन भी कहते हैं। समायोजन दो शब्दों को मिलाकर बना है – सम + आयोजन जिसमें सम का अर्थ भली भांति या अच्छी तरह व्यवस्था करना तथा समायोजन का अर्थ हुआ अच्छे ढंग से परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की प्रक्रिया जिसमें कि व्यक्ति की आवश्यकतायें पूरी हो जायें और मानसिक द्वन्द उत्पन्न न होने पाये।

गेट्स एवं अन्य ने समायोजन के अर्थ को निम्न रूप में बताया – समायोजन के दो अर्थ हैं एक अर्थ में निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति स्वयं तथा पर्यावरण के बीच अधिक सामंजस्य पूर्ण सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिर्वतन कर देता है। दूसरे अर्थ में समायोजन एक सन्तुलित दशा है जिस पर पहुंचने पर हम उस व्यक्ति को सुसमायोजित कहते हैं।

विद्यालयीन या शैक्षिक समायोजन :–

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा शैक्षिक संस्थान के नियमों के अनुकूल अपने को ढाल लेना, उनका पालन करना पाठक्रम व पाठयक्रमोत्तर गतिविधियों में भाग लेना व उनकी सन्तुष्टि प्राप्त करना ही शैक्षिक अथवा विद्यालयीन समायोजन है।

शोध के उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध कार्य द्वारा निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति की जायेगी :–

1. पारिवारिक परिवेश में रहकर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का अध्ययन करना।
2. छात्रावासीय परिवेश में रहकर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का अध्ययन करना।
3. पारिवारिक एवं छात्रावासीय परिवेश में रहकर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के विद्यालयीन समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना :–

शोध समस्या के अध्ययन के लिए निम्नलिखित परिकल्पना निर्धारित की गई है।

1. पारिवारिक परिवेश एवं छात्रावासीय परिवेश में रहकर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के विद्यालयीन समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।

शोध की परिसीमन :–

1. शोध कार्य का क्षेत्र केवल ग्वालियर जिले तक सीमित किया गया है।
2. शोध कार्य ग्वालियर जिले के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर के विद्यालयों तक सीमित है।
3. शोध कार्य केवल कक्षा 9वीं एवं 10वीं के विद्यार्थियों तक ही सीमित है।
4. शोधकार्य ग्वालियर जिले में संचालित छात्रावासों में निवासरत 300 विद्यार्थियों एवं सामान्य पारिवारिक परिवेश में निवासरत 300 विद्यार्थियों तक सीमित है।
5. शोध अध्ययन कुल 600 विद्यार्थियों तक ही सीमित है।

अध्ययन के चर :–

शोधार्थी के अध्ययन हेतु निम्नलिखित चर हैं :

1. **स्वतंत्र चर** : परिवार, विद्यार्थी एवं छात्रावास
2. **आश्रित चर** : विद्यालयीन समायोजन

शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए सर्वेक्षण विधि प्रयोग में लाई गई है। जो कि इस शोधकार्य में उपयुक्त है।

न्यादर्श :–

शोधार्थी द्वारा 15 छात्रावास जिसमें बालक एवं बालिका सम्मिलित हैं एवं 15 विद्यालयों का चयन किया गया शोधकार्य ग्वालियर जिले में संचालित छात्रावासों में निवासरत 300 विद्यार्थियों एवं सामान्य पारिवारिक परिवेश में निवासरत 300 विद्यार्थियों का समग्र न्यादर्श का प्रतिनिधित्व करता है। प्रत्येक छात्रावास से 20 एवं विद्यालय (पारिवारिक परिवेश वाले विद्यार्थी जो विद्यालय से चयनित किये गये हैं)

प्रयुक्त उपकरण :–

श्रीमती रागिनी दुबे द्वारा निर्मित प्रमाणीकृत किशोर समायोजन मापनी उपकरण का प्रयोग किया गया ।

प्रयुक्त सांख्यिकी

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी के लिए निम्नलिखित सांख्यिकी विधि प्रयुक्त की गई है –

- मध्यमान
- प्रामाणिक विचलन
- टी–टेस्ट

निष्कर्ष :–

परिकल्पना 1 :–

पारिवारिक परिवेश एवं छात्रावासीय परिवेश में रहकर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के विद्यालयीन समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।

598 df पर t का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.60 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 1.97 होता है। गणना से प्राप्त t का मान 5.85 इन दोनों से अधिक है अतः सार्थक है। अर्थात् पारिवारिक परिवेश एवं छात्रावासीय परिवेश में रहकर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के विद्यालयीन समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर होता है। परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है।

व्याख्या :–

पारिवारिक परिवेश एवं छात्रावासीय परिवेश में रहकर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के विद्यालयीन समायोजन स्तर में अन्तर दृष्टिगोचर होता है क्योंकि छात्रावास में रहकर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों में अध्ययन करने की अलग क्षमता विकसित होती है जो परिवार में नहीं हो पाती है। छात्रावास में अध्ययन करने से एक समय तालिका के अनुसार विद्यार्थी को स्वयं को ढालना पड़ता है जबकि पारिवारिक परिवेश में ऐसा नहीं होता है। जो विद्यार्थी छात्रावास में अध्ययन करते हैं वे विद्यालय में भी उसी अनुशासन,

समयबद्ध तालिका के अनुसार अध्ययन करते हैं जबकि परिवार में रहने वाले विद्यार्थी विद्यालय में समायोजित नहीं हो पाते हैं। इसलिए दोनों परिवेश के विद्यार्थियों में विद्यालयीन समायोजन में अन्तर दृष्टिगोचर होता है।

सुझाव :–

1. परिवार में बच्चों का उचित पालन–पोषण करना चाहिए तथा अभिभावकों को अनुशासन की मिसाल बननी चाहिए।
2. विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा देना चाहिए ताकि वह विद्यालय में समायोजित हो सकें।
3. छात्रावास की स्थापना शुद्ध, शांत तथा शिक्षापयोगी वातावरण में विद्यालय, महाविद्यालय के समीप की जानी चाहिये।
4. छात्रावास में अध्ययनरत विद्यार्थियों को किसी भी बन्धन में न बांधकर प्रताड़ित ना किया जाये जिससे उनकी शिक्षा में कोई अवरोध उत्पन्न हो।
5. छात्रावास में ऐसे अधीक्षक का चुनाव किया जाए उच्च शिक्षित हो तथा विद्यार्थियों के मन के भाव को समझकर उनके हितों को ध्यान में रखे।

संदर्भ सूची :–

1. *अस्थाना, मोहन, स्वरूप (1998), शिक्षा एवं विद्यार्थी, संगम प्रकाशन, गाजियाबाद ।*
2. *बरने तथा लेहनर, (1953), ''असामान्य मनोविज्ञान'' मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ।*
3. *राय, कृष्ण चंद, (2001), बालक और छात्रावासीय परिवेश, नैतिक प्रकाशन, मेरठ।*
4. *मिश्रा डॉ. महेन्द्र, (2009), 'समायोजन मनोविज्ञान' अर्जुन पब्लिशिंग हाउस 483124, प्रहलाद गली अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।*
5. *मिश्रा, अन्जू : (2007), अधिगम कक्षा का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, यूनिवर्सिटी बुक हाउस।*
6. *भार्गव, महेश, (2010), आधुनिक मनोवैज्ञानिक–परीक्षण एवं मापन, एच.पी. भार्गव बुक हाउस 19वां संस्करण।*
7. *भटनागर, सुरेश, (1991), ''शिक्षा मनोविज्ञान'', अटलान्टिक पब्लिशर्स, दिल्ली।*

****